महात्मा की दृष्टि : राधाकृष्ण का उद्यम

यह पुस्तक एक बेटी डॉ. शोभना राधाकृष्ण का अपने पिता श्री केएस राधाकृष्ण के प्रति प्रेम और आस्था का अक्षर-फल है। गांधीवादी राधाकृष्ण की भूमिका न सिर्फ गांधी के बाद के दौर में गांधीवादी आंदोलन में रही बल्कि उन्होंने देश के सामाजिक-आर्थिक ढांचे को गांधीवादी लीक पर फिर से गढ़ने में बीती सदी के 70 से 90 के दशक में बुनियादी स्तर पर बड़ा योगदान किया।

पुस्तक की लेखिका डॉ. शोभना राधाकृष्ण ने महसूस किया कि एक कर्मशील भविष्यदर्शी और विवेकी नेतृत्व के रूप में उनके पिता का गांधीवादी संस्थाओं के समन्वय और महात्मा गांधी के सर्वोदय और सत्याग्रह के दर्शन को आगे बढ़ाने के क्षेत्र में योगदान का व्यापक दस्तावेजीकरण का कार्य शेष है। यह पुस्तक इस कमी को पूरा करने की एक विनम्र पहल है। इस पुस्तक के जरिए हम जान सकते हैं कि राधाकृष्ण जी का शुरुआती जीवन कैसा था, कैसे वे गांधी के सेवाग्राम आश्रम आए, गांधीवादी पद्धति के आधार पर एक शिक्षाविद के रूप में उनका क्या योगदान रहा और यह भी कि विभाजन के समय देश में शरणार्थियों के पुनर्वास कार्य में कैसे उन्होंने महती भूमिका निभाई। यह पुस्तक हमें सर्वोदय और भूदान आंदोलन तथा आगे चलकर जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति आंदोलन के दौरान इंदिरा गांधी द्वारा देश पर लादे गए आपातकाल के दौर में राधाकृष्ण जी की विलक्षण भूमिका को भी भलीभांति रेखांकित करती है।

जेपी, राधाकृष्ण के गांधी शांति प्रतिष्ठान स्थित निवास से गिरफ्तार हुए थे। जब जेपी के तमाम सहयोगी और राजनीतिक-अराजनीतिक नेता-कार्यकर्ता सींखचों के पीछे डाल दिए गए तो राधाकृष्ण जी कई हफ्तों तक गिरफ्तारी से बचते हुए भूमिगत रहकर आंदोलन की जमीन को सींचते रहे। इस दौरान उन्हें कई स्तरों पर परेशानियों का सामना करना पड़ा। पर आखिरकार राधाकृष्ण जी की भी गिरफ्तारी हुई और उन्हें दिल्ली के तिहाड़ जेल में रखा गया। यह जेपी से जुड़ी संस्थाएं गांधी शांति प्रतिष्ठान, एसोसिएशन ऑफ वॉलेंटरी एजेंसीज इन रूरल डेवलपमेंट (एवार्ड) और गांधीयन इंस्टीट्यूट ऑफ स्टडीज के साथ राधाकृष्ण और जेपी के नजदीकी सहयोगियों के परिवारों के लिए गहन पूछताछ से गुजरने का यातनापूर्ण दौर था।

आपातकाल के दौरान लोकतांत्रिक मूल्यों-अधिकारों और अभिव्यक्ति की आजादी का कैसे गला घोंटा गया तथा कैसे राधाकृष्ण जी और अन्य गांधीवादी कार्यकर्ता इसके खिलाफ संघर्ष में विजयी रहे, यह पुस्तक इन संदर्भों को भी रेखांकित करती है। आपातकाल के बाद आम चुनाव की घोषणा हुई, जिसमें श्रीमती इंदिरा गांधी और उनकी कांग्रेस पार्टी को बड़ी पराजय का मुंह देखना पड़ा। जनता पार्टी ने नई सरकार बनाई। गांधी शांति प्रतिष्ठान जहां जेपी ठहरते थे, वह एक बार फिर से नई सरकार के स्वरूप और गठन को लेकर विमर्श का एक बड़ा केंद्र बना। राधाकृष्ण के विचार और परामर्श का सभी लोग आदर करते थे। लिहाजा उनकी शख्सियत एक 'किंग मेकर' के तौर पर उभरी और लोगों ने भी इसे उनके लिए नया संबोधन बना दिया।

बहरहाल, राधाकृष्ण जी ने इस दौरान अपने को सक्रिय राजनीति से दूर रखा तथा रचनात्मक और ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के साथ संस्थाओं व युवा कार्यकर्ताओं के निर्माण जैसे कार्य में प्रतिबद्धता के साथ जुटे रहे। यह पुस्तक राधाकृष्ण जी के न रहने के 25 साल बाद उनके जीवन और कृतित्व के साथ उन तमाम अनाम -अनजान कर्मवीरों के स्मरणोत्सव के रूप में भी सामने आई है, जिन्होंने गांधी के सपने का भारत बनाने के लिए अमूल्य कार्य किए।

संपर्क : श्री रवि चोपड़ा, 9810078620 , radhakrishnanayana@gmail.com